# पाठ्यक्रम योजना

## परिचय

इस लेख में हम, प्री-स्कूल शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु "पाठ्यक्रम योजना " के बारे में समझेंगें। पाठ्यक्रम योजना में तीन प्रमुख भाग होतें हैं – अल्पकालिक योजना, मध्यम अवधि योजना और दीर्घकालिक योजना। एक सुनियोजित पाठ्यक्रम, बच्चों को उनके विकासात्मक लक्ष्यों की उपलब्धि और विद्यालय में प्राप्त होने वाली शिक्षा के लिए उनकी नींव मजबूत करने में मदद करता है।

## पाठ्यक्रम योजना के सिद्धान्त[1]

छोटे बच्चों को खेल, अवलोकन, सकारात्मक अनुभव, नकल करने, अभिव्यक्ति, परीक्षण-निरीक्षण, अभिनय आदि के अवसर प्रदान करने से, एवं शारीरिक और भावनात्मक रूप से सुरक्षित वातावरण प्रदान करने से, वे बेहतर सीखते हैं। इसलिए प्री-स्कूल शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम योजना के दौरान कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांतों का अनुपालन करने से, बच्चों को एक सर्वांगीण शिक्षा दी जा सकती है –

- पाठ्यक्रम योजना में अल्पकालिक, मध्यम अवधि और दीर्घकालिक गतिविधियाँ और लक्ष्य शामिल होने चाहिए।
- अल्प अवधि में दैनिक और साप्ताहिक लक्ष्य, माध्यम अवधि में मासिक, त्रैमासिक या अर्धवार्षिक लक्ष्य, और दीर्घ अवधि में वार्षिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए गतिविधियों की योजनाएँ बनाई जाती हैं।
- सभी गतिविधियां बच्चों के आयु और उनके विकास के उपयुक्त होने चाहिए।
- योजना में एक निर्धारित दैनिक दिनचर्या होनी चाहिए, जो कि बच्चों की जरूरतों और रुचियों को ध्यान में रखते हुये लचीला भी हों।
- छोटे बच्चों की ध्यान अवधि 15-20 मिनट की होती हैं। इसलिए दैनिक दिनचर्या की गतिविधियों की अवधि 30 मिनट की होनी चाहिए, जिसमें दूसरी गतिविधि के लिए बच्चों को तैयार करने हेतु समय सम्मिलित हैं।
- एक दिन की दिनचर्या 3-4 घंटों की होनी चाहिए, जिसमें मॉर्निंग स्नैक्स और मध्यान भोजन के लिए समय निर्धारित हो।
- दिनचर्या में सभी विकास के क्षेत्रों, यानि संज्ञानात्मक, शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक-भावनात्मक, भाषा एवं रचनात्मक विकास को संबोधित, करने वाली गतिविधियाँ सम्मिलित होनी चाहिए।
- योजना में, संरचित और स्वतंत्र खेल, कक्षा-कक्ष के अंदर और बाहर के खेल, व्यक्तिगत और छोटे और बड़े समूह में गतिविधि/खेल, के आयोजन में संतुलन होना चाहिए।
- गतिविधियों का स्तर सरल से जटिल की ओर होना चाहिए।
- पाठ्यक्रम बच्चों के लिए प्रासंगिक होना चाहिए, जिसमें बच्चे के भौतिक, सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण से संबंधित थीम/विषयों पर गतिविधियाँ शामिल होनी चाहिए।

---

[1] National Institute of Open Schooling. (n.d.). *Senior secondary course – Early Childhoohood Care and Education.* NIOS.

- पाठ्यक्रम में ऐसी गतिविधियाँ सम्मिलित होनी चाहिए, जिससे बच्चे विकसित कौशलों और प्राप्त की गयी जानकारी का उपयोग अपने परिवेश से बेहतर जुड़ने के लिए कर सकें।
- पाठ्यक्रम समावेशी होना चाहिए, जिसमें सभी प्रकार के धर्म, समुदाय, लिंग व दिव्यांगता वाले बच्चों को विकास और सीखने के समान अवसर मिल सकें।
- गतिविधियों में क्रमिक प्रगति होनी चाहिए, जिससे बच्चों की विद्यालय की तैयारी और आजीवन सीखने के कौशल को सुनिश्चित किया जा सकें।
- पाठ्यक्रम में अल्पकालिक, मध्यम अवधि और दीर्घकालिक लक्ष्य निर्धारित होने चाहिए, जिससे दैनिक दिनचर्या की संरचना और गतिविधियों में निरंतरता बनाए रखने में मदद मिलती है। इससे बच्चों के सीखने और विकासात्मक प्रक्रियाओं की प्रभावशीलता बढ़ती हैं।
- बच्चों की विकासात्मक उपलब्धियों की प्राप्ति के लिए उनकी भागीदारी और प्रगति का सतत आकलन करते हुये, उनकी ज़रूरतों के अनुसार शिक्षण विधियों और गतिविधियों को समायोजित करना चाहिए।

## पहल पुस्तिका और वार्षिक गतिविधि कैलेंडर में अल्पकालिक, मध्यम अवधि और दीर्घकालिक योजनाओं की विशेषताएँ

निदेशालय द्वारा विकसित पहल पुस्तिका और वार्षिक गतिविधि कैलेंडर के निर्माण में पाठ्यक्रम योजना के सिद्धांतों का अनुपालन किया गया हैं। इन सिद्धांतों के आधार पर पहल और गतिविधि कैलेंडर में अल्पकालिक, मध्यम अवधि और दीर्घकालिक योजना से संबन्धित निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

अल्पकालिक योजना:

- **निर्धारित दैनिक दिनचर्या**: वार्षिक गतिविधि कैलेंडर में 3.5 घंटों का दैनिक दिनचर्या निर्धारित किया गया हैं, जिसमें कहानी सुनाना, भावगीत, कला और शिल्प, संवेदी खेल, बड़े और छोटे मांसपेशियों की गतिविधि आदि के माध्यम से सभी विकास के क्षेत्रों को संबोधित करते हुये पाँच सत्र हैं।
- **संतुलित दिनचर्या का संचालन:**
  - ✓ दिनचर्या में आंगनवाड़ी कार्यकत्री के साथ संरचित गतिविधि/खेल के साथ-साथ स्वतंत्र खेल (दूसरे सत्र में) का समय निर्धारित किया गया हैं।
  - ✓ दिनचर्या के पहले, तीसरे और पाँचवे चक्र में बड़े समूह की गतिविधियों के दौरान, बच्चों में सामाजिक-भावनात्मक कौशलों पर विशेष ध्यान दिया गया हैं।
  - ✓ बच्चों की छोटी मांसपेशियों, संज्ञानात्मक कौशल, एवं प्रारम्भिक साक्षारता और संख्यात्मक कौशलों के विकास हेतु, दिनचर्या के दूसरे और चौथे चक्र में आयुवर्ग अनुसार छोटे समूह की गतिविधियाँ दी गई हैं।
  - ✓ बच्चों की बड़ी मांसपेशी के विकास हेतु तीसरे स्तर में बाहरी खेल का समय निर्धारित किया गया हैं।
- **गतिविधियों में विविधता:** बच्चों की रुचि और सहभागिता हेतु दिनचर्या की गतिविधियों के आयोजन एवं शिक्षण सामग्री के प्रयोग में विविधता हैं।

- **गतिविधियों में दोहराव:** साप्ताहिक योजना में गतिविधियाँ दोहराई गई हैं, जिससे बच्चों में अपेक्षित कौशलों का नियमित विकास एवं विभिन्न अवधारणाओं पर उनकी समझ को सुदृढ़ किया जा सकें।
- **बच्चों की पोर्टफोलियो का रख-रखाव:** बच्चों द्वारा प्रतिदिन की गयी चित्रकारी को पोर्टफोलियो में संकलित किया जाता हैं।
- **गतिविधि पुस्तिका का प्रयोग:** बच्चों में होने वाले कौशलों और अवधारणाओं पर उनकी विकसित समझ का आकलन करने हेतु सप्ताह में एक दिन गतिविधि पुस्तिका के लिए निर्धारित किया गया हैं।

मध्यम अवधि योजना:

- **मासिक थीम/विषय:**
  - ✓ 9 प्रासंगिक थीम/विषयों को 52 सप्ताहों के कैलेंडर में विभाजित किया गया हैं।
  - ✓ थीम आधारित अवधारणाओं को निर्देशित चर्चा, कहानी सुनना, भावगीत, चित्रकारी जैसी गतिविधियों में एकीकृत किया गया हैं।
  - ✓ प्रत्येक दो थीम के पश्चात पुनरावृत्ति के लिए 1 सप्ताह निर्धारित किया गया हैं।
- **विशेष मासिक कार्यक्रमों का आयोजन:** बच्चों में सामाजिक-भावनात्मक विकास और सीखने के प्रति की उनकी जिज्ञासा को बढ़ावा देने के लिए, पहल पुस्तिका में विशिष्ट मासिक गतिविधियों हेतु दिशा-निर्देश दिये गए है, जैसे –
  - ✓ सुरक्षित एवं नजदीकी स्थानीय क्षेत्रों में पर्यटन।
  - ✓ बच्चों के जन्मदिन का आयोजन।
  - ✓ थीम आधारित उत्सव जैसे "घर के सदस्यों पर रोल-प्ले", "पशु-पक्षियों पर चित्रकारी दिवस" आदि का आयोजन।
- **मासिक पी०टी०एम का आयोजन:** पोर्टफोलियो, गतिविधि पुस्तिका और अवलोकन के माध्यम से पूरे माह में बच्चों में हुई प्रगति का आकलन करते हुये, पी०टी०एम में उनके अभिभावकों के साथ साझा किया जाता हैं।

दीर्घकालिक योजना:

- **प्रारम्भिक साक्षारता और संख्यात्मक गतिविधियों में क्रमिक प्रगति:** वार्षिक गतिविधि कैलेंडर में प्रारम्भिक साक्षारता और संख्यात्मक कौशलों में क्रमिक ध्यान में रखते हुये गतिविधियों का आयोजन किया गया है। इससे विद्यालय में भाषा और गणित संबन्धित जटिल अवधारणाओं को समझने के लिए बच्चों की बुनियाद मज़बूत होगी।

***आँगनवाड़ी केंद्र में पाठ्यक्रम के अनुपालन में आँगनवाड़ी कार्यकत्री की भूमिका***

- *आंगनवाड़ी केंद्र पर प्री-स्कूल प्रतिदिन करवाए !!*
- वार्षिक गतिविधि कैलेंडर में दिए गए दैनिक दिनचर्या का नियमित अनुपालन करें।
- 3.5 घंटों की प्री-स्कूल अवश्य से करवाएँ।
- बच्चों के पोर्टफोलियो और गतिविधि पुस्तकों का रख-रखाव करें।

## *नियोजित पाठ्यक्रम दे बेहतर परिणाम!!*

**पाठ्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सजग अभ्यास**

- **प्रतिदिन पोर्टफोलियो का उपयोग –** बच्चों को प्रतिदिन पोर्टफोलियो का प्रयोग करने हेतु प्रोत्साहित करने से उनमें, साप्ताहिक, मासिक या वार्षिक रूप से हो रही प्रगति को समझने में मदद मिलती हैं। बच्चों के पोर्टफोलियो का आकलन करने से, गतिविधियों और टी०एल०एम के आयोजन और व्यवस्था को बच्चों के जरूरतों के अनुसार समायोजित किया जा सकता हैं।

- **गतिविधि पुस्तकों का उचित प्रयोग –** बाल गतिविधि पुस्तकाएँ बच्चों द्वारा प्राप्त किए गए ज्ञान और उनके विकासात्मक स्तर के कौशलों का आकलन करने हेतु उपयोगी हैं। इसलिए इन पुस्तकों का अनियोजत रूप से उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। पुस्तक के कार्यपत्रकों के सही उपयोग हेतु, प्रत्येक पृष्ठ में आंगनवाड़ी कार्यकत्री के लिए विशिष्ट निर्देश दिये गए हैं, जिनके अनुपालन से बच्चो के विकास के स्तरों का सही आकलन किया जा सकता हैं।

- **औपचारिक रूप से अक्षर और संख्या ज्ञान न करना –** भाषा और संख्यात्मक कौशल में क्रमिक प्रगति बच्चों को अवधारणाओं को बेहतर ढंग से याद रखने में मदद करती है। रटने की आदत बच्चों को महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक कौशल हासिल करने से रोकती है, जो जटिल भाषा और गणितीय अवधारणाओं पर समझ बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं।